

वैश्विक व्यापार का लचीलापन

यह एडिटरियल 11/08/2021 को 'द हट्टू' में प्रकाशित "Unpacking the resiliency of global trade, yet again" लेख पर आधारित है। इसमें कोविड-19 महामारी के कारण वैश्विक आपूर्ति शृंखला पर पड़े प्रभाव और इसे सुदृढ़ करने के उपायों के संबंध में चर्चा की गई है।

कोविड-19 महामारी के वनाशकारी प्रभाव ने विश्व अर्थव्यवस्था को 4.4% और वैश्विक व्यापार को 5.3% तक संकुचित कर दिया है, जबकि लगभग 75 मिलियन रोजगार हानिका आकलन किया गया है।

दुनिया भर के देशों ने महामारी के कारण हुई वस्तुओं की कमी के प्रति संरक्षणवादी प्रतिक्रियाओं और राष्ट्रवादी आकांक्षाओं का खुद अपनाया है जो जटिल सीमा-पार आपूर्ति शृंखलाओं को बाधित करने की क्षमता रखती हैं।

महामारी के कारण मानवीय पीड़ा तो है ही, इसके अतिरिक्त व्यापार और उत्पादन में अपरहार्य गरिबत का परिवारों तथा कारोबारों पर पीड़ादायक प्रभाव अलग से पड़ेगा।

अतीत के अनुभव बताते हैं कि ऐसे ऐतिहासिक अवरोध प्रायः नए वैश्विक संबंधों को जन्म देते हैं और उनमें तेजी लाते हैं जो फरि संस्थागत परिवर्तनों की नींव रखते हैं और राष्ट्रों के बीच स्थायी सहयोग की मंशा रखते हैं।

बेहतर वैश्विक अर्थव्यवस्था का निर्माण

- द्वितीय विश्व युद्ध ने सुदृढ़ बहुपक्षीय संस्थानों के सृजन का मार्ग प्रशस्त किया जहाँ संयुक्त राष्ट्र के अतिरिक्त युद्धकाल के बाद की खस्ताहाल अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण में सहायता के लिये **ब्रेटन वुड्स संस्थानों** (विश्व बैंक एवं अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष) और अंतरराष्ट्रीय व्यापार संगठन (ITO) का गठन किया गया।
- अंतरराष्ट्रीय व्यापार की बाधाओं को दूर करने के लिये वर्ष 1947 में **प्रशुल्क एवं व्यापार पर सामान्य समझौता** (General Agreement on Tariffs and Trade- GATT) पर हस्ताक्षर किए गए।
- 1970 के दशक में तेल कीमतों के झटकों ने वर्ष 1974 में **अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी** (International Energy Agency- IEA) की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया ताकि तेल आपूर्ति व्यवधानों का प्रबंधन किया जा सके और वैश्विक ऊर्जा सुरक्षा की आवश्यकता के संबंध में जागरूकता पैदा की गई।
- वर्ष 2008 के वित्तीय संकट ने G20 शिखर सम्मेलन का मार्ग प्रशस्त किया जो वर्ष 1999 में गठित **G20** वित्त मंत्रियों के मंच का अगला चरण था। इसका उद्देश्य राजकोषीय वसतिार के कारण उत्पन्न मुद्रास्फीति के नियंत्रण की वैश्विक आवश्यकता के लिये सहयोग को **G7** देशों के दायरे से आगे ले जाना था।
- इन घटनाक्रमों का वैश्विक व्यापार पर परिणामी प्रभाव पड़ा, जहाँ मात्रा में नाटकीय उछाल आया और यह वर्ष 1950 में मात्र 60.80 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर वर्ष 2019 में 19,014 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच गया।
- ऊपर दिये गए पैटर्न कोविड-19 संकट के बाद वैश्विक व्यापार में सुधार के प्रति एक उम्मीद जगाते हैं, जहाँ सामूहिक विश्वास यह है कि अंतरराष्ट्रीय व्यापार विकास और समृद्धि के लिये महत्त्वपूर्ण है, जबकि क्षमता के सृजन के लिये प्रतिस्पर्धा सर्वप्रमुख तत्त्व है।

भारत का दृष्टिकोण

- कोविड-19 महामारी के दौरान भारत के समक्ष वदियमान चुनौतियाँ अन्य देशों के सामने प्रस्तुत चुनौतियों से अलग नहीं हैं **राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय** (NSO) के अनुसार इसकी जीडीपी में 7.3% की कमी आई है; और सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी प्राइवेट लिमिटेड के अनुसार लगभग 10 मिलियन नौकरियों का नुकसान हुआ है।
- भारत का व्यापार 493 बिलियन अमेरिकी डॉलर (वस्तु व्यापार 290 बिलियन अमेरिकी डॉलर और सेवा व्यापार 203 बिलियन अमेरिकी डॉलर) पर मंद बना रहा है।
- आने वाले समय में भारत के आर्थिक विकास के संबंध में IMF ने सकारात्मक अनुमान प्रकट किए हैं और विश्व भर के सामान्य रुझानों के अनुरूप ही यह माना है कि व्यापक टीकाकरण कोविड-19 के प्रभाव को सीमित कर सकता है।

- भारत को परषिकृत पेट्रोलियम उत्पादों, फार्मा, रत्न एवं आभूषण, कपड़ा एवं वस्त्र, इंजीनियरिंग वस्तुएँ, चावल, तेल खाद्य और समुद्री उत्पादों जैसी अपनी पारंपरिक निर्यात टोकरी से आगे बढ़ते हुए मूल्यवर्द्धति उत्पादों पर ध्यान केंद्रित बनाए रखने की आवश्यकता होगी।

वैश्विक व्यापार आपूर्ति शृंखला से संबद्ध समस्याएँ

- **वैश्विक मूल्य शृंखला का वधितन:** कोविड-19 संकट का उन नगिर्मों और व्यवसायों पर वनिशकारी प्रभाव पड़ रहा है, जो सीमा-पार आपूर्ति शृंखलाओं द्वारा समर्थित आर्थिक अन्योन्याश्रयता से लाभ उठा रहे थे।
 - चीन वशिव का सबसे बड़ा उत्पादन आधार है और कई आपूर्ति शृंखलाओं के केंद्र में है। कोरोनावायरस के प्रकोप के बाद से वे कंपनियॉ बुरी तरह प्रभावित हुई हैं जो चीन पर नरिभर थीं।
- **वशिव व्यापार संगठन की वार्ताओं में अवरोध:** यह वशिव व्यापार संगठन के लिये आगे और बुरे दनिों का संकेत हो सकता है, क्यॉकव्यापार नियमों ने तब सर्वश्रेष्ठ योगदान किया है जब वैश्विक अर्थव्यवस्था फल-फूल रही थी और उसके समक्ष कोई संकट मौजूद नहीं था।
- **उभरती हुई और वकिसशील अर्थव्यवस्थाओं के सामने मौजूद समस्याएँ:** व्यापार और वकिस पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (UNCTAD) ने माना है कि निर्यात-संचालित वकिस पर नरिभर उभरती हुई और वकिसशील अर्थव्यवस्थाओं पर अब भारी असर पड़ेगा, क्यॉकवैश्विक अर्थव्यवस्था संकुचित हो रही है और वशिव संरक्षणवादी नीतियों को अपना रहा है।
 - ऐसे में अल्पवकिसति देश, जनिकी अर्थव्यवस्था कच्चे माल की बकिरी से संचालित है, भी कठिन परस्थितियों का सामना करेंगे।

आगे की राह

- **वभिन्न देशों में प्रोत्साहन पैकेज:** लंबे समय से नषिकरयि पड़ी वैश्विक आपूर्ति शृंखलाओं को प्रोत्साहन पैकेज और बाध्य बचत द्वारा लचीला बनाया जा सकता है। इस तरह के हस्तक्षेप से कम उत्पादन लागत के साथ वनिरिमाण को पुनर्जीवित करने, नविश को प्रेरित करने और प्रोद्योगिकी हस्तांतरण को बढ़ावा देने में मदद मिलने की उम्मीद है।
- **वशिव व्यापार संगठन के अंतर्गत वार्ता शुरू करना:** कोविड-19 के बाद के वशिव में वशिव व्यापार संगठन के सदस्यों को व्यापार सुविधा नियमों को प्रोत्साहन देना चाहिये।
 - गहन आर्थिक एकीकरण का मार्ग प्रशस्त करने वाली पारस्परिक रूप से लाभकारी व्यापार व्यवस्था को द्वपिकषीय और कषेत्रीय स्तरों पर कार्यान्वित किया जाना चाहिये ताकि सभी हतिधारकों के लिये लाभ की स्थिति पैदा की जा सके, और इसमें उपभोक्ताओं को भी शामिल रखा जाए जो कम बाधाओं और सामंजस्यपूर्ण मानकों से लाभान्वित होने की प्रवृत्ति रखते हैं।
- **प्रोद्योगिकी का दोहन:** जो देश प्रोद्योगिकी का दोहन करेंगे, वैश्विक अर्थव्यवस्था पर रूपांतरणकारी प्रभाव के साथ भवषिय में अंतरराष्ट्रीय व्यापार पर हावी रहेंगे।
 - जसि तरह 19वीं सदी में भाप इंजन और 20वीं सदी में कंप्यूटिंग पावर आर्थिक वकिस का मुख्य संचालक रहे थे, 21वीं सदी में 'डेटा' आर्थिक वकिस के मुख्य चालक होंगे।
 - ई-कॉमर्स और वर्चुअल वर्ल्ड में तीव्र वकिस कार्यबल से पूरी तरह से नए कौशल की माँग करेगा। इसलिये, आर्थिक नीतियों को श्रमिकों के लिये मजबूत सुरक्षा जाल पर ध्यान देना चाहिये और परिवारों के लिये आय सुरक्षा, कौशल प्रशिक्षण, स्वास्थ्य देखभाल एवं शैक्षिक सहायता की सुनिश्चितता पर केंद्रित होना चाहिये।
- **वनिरिमाण को पुनः आरंभ करने पर ध्यान देना:** भारत जैसी उभरती अर्थव्यवस्थाओं के लिये उसकी दीर्घकालिक रणनीति का एक अंग यह होना चाहिये कि ऐसे पारतंत्र का नरिमाण किया जाए जो मूल्यवर्द्धति वनिरिमाण और प्रोद्योगिकी-प्रेरित तैयार उत्पादों को प्रोत्साहित करे।
- **समावेशी दृष्टिकोण:** सर्वाधिक कमजोर देशों की आवश्यकताओं को संबोधित किया जाना आवश्यक है। उदाहरण के लिये, निर्यात प्रतर्बिधों और कषेत्रीय भंडार के नरिमाण के संबंध में नरिधनतम देशों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये वशिष्ट छूट या सहायता देने जैसे उपाय किए जा सकते हैं।
- **अनुकूल कारोबारी माहौल:** बाजारों को खुला और अनुमेय बनाए रखने के साथ ही अनुकूल कारोबारी माहौल को बढ़ावा देना नए सरि से नविश को प्रोत्साहित करने के लिये महत्त्वपूर्ण होगा। यदि सभी देश मिलकर कार्य करें तो किसी एक देश की अकेली कार्रवाई की तुलना में पुनरुद्धार की गति अधिक तीव्र होगी।

नषिकरष

तात्कालिक लक्ष्य महामारी को नियंत्रण में लाना और लोगों, कंपनियों और देशों को होने वाले आर्थिक नुकसान को कम करना है। लेकिन नीतनिरिमाताओं को महामारी के बाद की योजना पर भी कार्य करना शुरू कर देना चाहिये।

एक तीव्र और सुदृढ़ पुनरुद्धार संभव है। अभी लिये गए नरिणय पुनरुद्धार के भवषिय के स्वरूप और वैश्विक वकिस संभावनाओं को नरिधारित करेंगे।

हमें एक मजबूत, संवहनीय और सामाजिक रूप से समावेशी पुनरुद्धार की नींव रखने की आवश्यकता है। इस परिप्रेक्ष्य में, राजकोषीय और मौद्रिक नीतिके साथ-साथ व्यापार भी एक महत्त्वपूर्ण घटक होगा।

अभ्यास प्रश्न: कोविड-19 महामारी के वनिशकारी प्रभाव ने वशिव अर्थव्यवस्था और वैश्विक व्यापार को संकुचित कर दिया है। इस संदर्भ में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लिये गए नीतित नरिणय वैश्विक वकिस और व्यापार संभावनाओं के आकार को नरिधारित करेंगे। चर्चा कीजिये।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/resiliency-of-global-trade>

